लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 03 अंक 48 लखनऊ। सोमवार 21 से 27 अगस्त-2017
e-mail-pawanprawah@gmail.com
मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

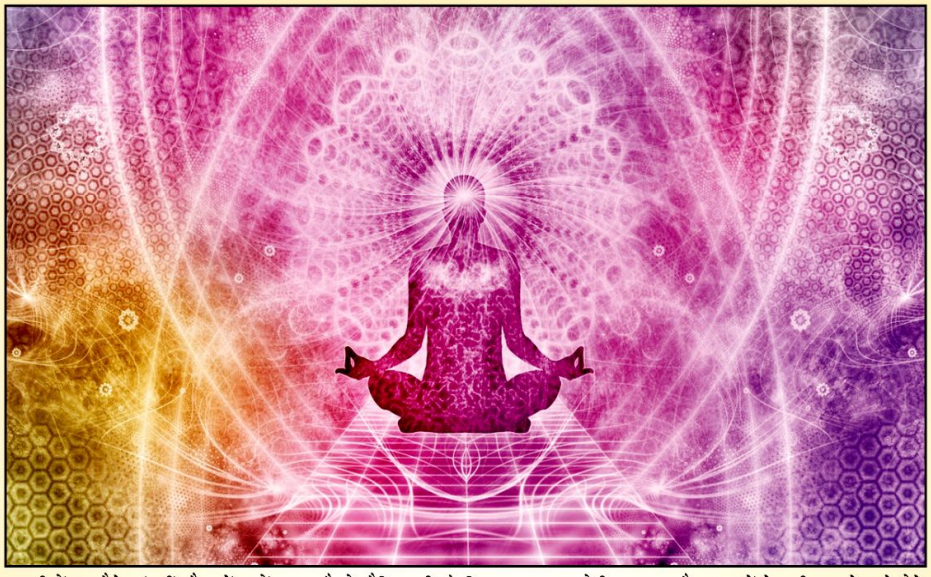

(भाग-14)

पिछले 13 अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का सन्चार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर मे चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता है, उर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगो के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा कैसे अपने शरीर मे बुलाये, उसकी क्या विधि है, ऊर्जा को बुलाने अथवा संग्रह के उपरान्त का अनुभव और शरीर के मुख्यकेन्द्रों में ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-I व विशिष्ट उपचार स्तर-II में प्रत्यक्ष ऊर्जा के लिए विजुअलाइज़ेशन की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे । इस अंक में, विशिष्ट उपचार स्तर-II के विषय मे क्रमशः जागरूकता और स्वास्थ्य के बारे मे आगे बताया गया है।

क्रमशः...प्रतीक और विजुअलाइज़ेशन में अवरुद्ध चक्र के आगे का भाग: अवरुद्ध चक्र आमतौर पर कुछ मनोवैज्ञानिक प्रमुख मुद्दों के साथ और कुछ अस्तित्वगत पूर्वाग्रहों के साथ मेल खाते हैं, जो आपके रोगी ने वास्तविकता से अपने रिश्ते में अपनाया है । ये अस्तित्वपूर्ण पूर्वाग्रह-आत्म-जागरूकता की व्यापक सीमा और रोगी के लिए उपलब्ध कार्रवाई को अभिव्यक्ति की सीमा तक रुकावट पैदा कर देते हैं। अक्सर उनके भावनाओं से बंधे होने के कारण मानसिक और आध्यात्मिक पहलुओं को हमेशा से शामिल किया जाता है क्योंकि अक्सर वे अन्य व्यक्तियों के साथ भी संबंध रखते हैं। इससे रोगी की संपूर्ण जीवन प्रक्रिया प्रतिबंधित हो जाती है। यहा यह भी जनाना आवश्यक है कि स्वस्थ कार्य करने के लिए चक्रों का संचालन बहुत महत्वपूर्ण है इसलिए उनमें से किसी भी दोषपूर्ण स्थिति के बारे में जागरूक होना और उसे सही करना आवश्यक है।

मरीजों का चौथे, पांचवीं और 6वें चक्रों का अवरुद्ध होना एक बहुत आम बात है। वही दूसरे, तीसरे और सातवे चक्रों का अवरुद्ध होना भी काफी सामान्य हैं, जबकि पहले चक्र का अवरुद्ध होना कुछ हद तक सामान्य हैं। कुछ मरीजों में केवल एक अवरुद्ध चक्र होता है और कई अन्य रोगियों में दो या अधिक अवरुद्ध चक्र होते हैं- **उदाहरण के लिए:** एक और एक उच्च चक्र बहुत कम अवरुद्ध होते हैं। जब आपके रोगी में दो या अधिक अवरुद्ध चक्र मौजूद होते हैं, तो यह आमतौर पर विभिन्न चक्रों में उपचार कार्य करते समय एक से अधिक कारणों का संकेत मिलता है- हालांकि उनमें एक दूसरे के साथ कुछ संबंध भी हो सकते हैं। कभी-कभी मरीज में एक चक्र को ही देखा जाता है जो लंबे समय से अवरुद्ध होते हैं। साथ ही रोगी के व्यक्तिगत जीवन में परिवर्तन के साथ एक अन्य चक्र या चक्र जो कभी-कभी अवरुद्ध होते हैं, पाया जाता है। अन्य तकनीकों के साथ संगीत कार्यक्रम अक्सर आपके रोगी के लिए चक्र को अनवरोधित करने में, बहुत अधिक भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक समाशोधन प्रदान करता है और शारीरिक रोग को भी रोकता है।

13.2 रिसाव और छेद होना: हम पहले ही जान चुके हैं कि आभा सात अलग-अलग अंतर-संरचनात्मक परतों से बना है। आभा के रिसाव और छेद ऐसे क्षेत्र हैं जहां एक या अधिक आभा परतों का (आवरण) क्षतिग्रस्त हो गया है। इलाज के लिये रिसाव और छेद एक ही तकनीक का उपयोग किया जाता है लेकिन उनमें महत्वपूर्ण अंतर होता है।

रिसाव आमतौर पर आभा की पहली परत होती है जो भौतिक शरीर के निकटतम परत पर होती है। वे ऐसे क्षेत्र होते हैं जहां ऊर्जा क्षेत्र की ऊर्जा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है-इसको सामान्य स्वरूप में बनाए रखने के बजाय इसे दूर करना उपयुक्त होगा। रिसाव को आभा परत को 'पतले से पतले' की तुलना में किया जा सकता है जैसे पतले कपड़े पहनने से कपड़े की परिधान की सुरक्षा और कमजोर होने की वजह से शरीर की गर्मी का नुकसान हो सकता है। अतः आभा की रिसाव-कमजोर और आभा परत की अखंडता को दर्शाती है, जिसके परिणामस्वरूप ऊर्जा का नुकसान होता है। रिसाव से होने वाली ऊर्जा की यह हानि आपके रोगी के लिए हानिकारक है, क्योंकि यह प्राण ऊर्जा की ताकत को कम करती है जिस पर स्वास्थ्य के हर पहलू का आधार टिका होता है।

रिसाव आमतौर पर भौतिक शरीर के कुछ हिस्सों में पाए जाते हैं जो कि किसी प्रकार के पहनावे, तनाव या शारीरिक आघात के कारण होता हैं और अक्सर जोड़ों पर पाया जाता है। आमतौर पर वे शरीर के सामने पाए जाते हैं: घुटने, कंधे और कूल्हे के जोड़ बहुत आम जगह हैं। वे कभी-कभी गर्दन, टखने और कोहनी के पास भी पाए जाते हैं।

छेद (लीक के विपरीत) आमतौर पर आभा की उच्च परतों में होते हैं। पहली परत के ऊपर जिसका अक्सर कई परतों के माध्यम से विस्तारित होना पाया जाता है। छेद, लीक के समान हैं, इसमें वे क्षेत्र आते हैं जहां आभा की परत क्षतिग्रस्त हो गयी हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऊर्जा का नुकसान होता है। हालांकि, छेद-क्षति का अधिक गंभीर स्वरूप है और वे क्षेत्र-वास्तविक 'छेद' की तुलना कर सकते हैं **उदाहरण स्वरूप:** कपड़े में एक छेद पूरी तरह से कवर को नष्ट करने की क्षमता रखता है। आभा में छेद पूरी तरह से खुले होते हैं जो समपूर्ण क्षेत्र की पूर्णता के लिये नुकसान के क्षेत्र और आपके रोगी के लिए अधिक हानिकारक होते हैं। जबकि पूर्ण ऊर्जा का एक छोटा और अधिक क्रमिक नुकसान होता है। आम तौर पर छेद, ऊर्जा की अधिक गंभीर हानि होती है। छेद अपने रोगी के बाहर और अपने रोगी के ऊर्जा क्षेत्र में अस्वास्थ्यकर ऊर्जा के आक्रमण की अनुमति दे सकता है। इसलिए आपके रोगियों के लिए छेद एक डबल खतरा हैः वे ऊर्जा का नुकसान (आपके रोगी के क्षेत्र से बाहर निकल रहे हैं और बाहर निकलते हैं) और संरक्षण की हानि (अवांछनीय ऊर्जा से आपके रोगी के क्षेत्र से बाहर आते हैं और आ रहे हैं) पहुंचाते हैं।

छेद आभा की किसी भी परत पर मौजूद हैं, लेकिन अक्सर बीच की परतों में पाए जाते हैं। वे पहली परत पर शुरू कर सकते हैं, लेकिन यह सामान्य स्तिथि नहीं है। आम तौर पर वे दूसरी, तीसरी या चौथे परत (या अधिक उच्च परतों) पर शुरू करते हैं, और अक्सर ऊपर दो, तीन या अधिक परतों के माध्यम से विस्तार करते हैं। छेद की सातवीं परत सभी तरह का विस्तार करने के लिए असामान्य नहीं है। प्रत्येक मरीज अपने में बेजोड़ है, हालाकि छेद किसी भी परत पर शुरू हो सकते हैं और परतों के किसी भी संख्या के माध्यम से विस्तार कर सकते हैं। छेद, जैसे रिसाव, अक्सर किसी तरह के तनाव से संबंधित होते हैं, लेकिन छेद क्षति का अधिक गंभीर स्वरूप है जो अक्सर भावनात्मक, मानसिक या आध्यात्मिक तनाव या पिछले दर्दनाक अनुभवों से संबंधित होते हैं। कुछ आघातों में काफी अधिक तीव्रता से दो, तीन या अधिक उच्च आभा परतों में छेद पैदा हो सकता है-जो अधिकांश परतों और सातवीं परत तक सीमित होता है। आभा के कई परतों पर बड़े छेद न केवल गंभीर ऊर्जा नुकसान पैदा करेंगे, बल्कि मानसिक भेद्यता में भी असर होगा। ये छेद अक्सर अतीत और/ अथवा वर्तमान मे बेकार संबंधों से विभिन्न प्रकार के और/अथवा समस्याओं के मामलों से संबंधित हैं।

छेद आमतौर पर शरीर के सामने ही पाए जाते हैं, और बड़े या छोटे हो सकते हैं। बड़े व आपत्तिजनक छेद जो कई परतों के माध्यम से फैलते हैं, आमतौर पर धड़ के विभिन्न भागों- पेट या छाती क्षेत्र पर पाए जाते हैं-हालांकि कभी-कभी वे कहीं और भी हो सकते हैं। इनसे क्षेत्रीय परतों के क्षतिग्रस्त क्षेत्रों को ठीक करने के लिए रोगी को बहुत लाभ होता हैः यह गंभीर ऊर्जा हानि और मानसिक भेद्यता दोनों को रोकता है।

14.0(अ) औरिक ऊर्जा की अशुद्धिया : औरिक ऊर्जा का दोष प्रायः अस्वस्थ, स्थिर व काली/अंधेरी ऊर्जा हैं जो कुछ क्षेत्रों में इकट्ठी होती हैं तथा यह ऊर्जा सामान्यरूप मे स्वस्थ व ऊर्जावान कार्यों के लिए आवश्यक नहीं हैं। यह स्वस्थ ऊर्जा के नियमों और सामान्य प्रवाह के अनुसार कार्य नहीं करती हैं, लेकिन इसके बजाय उज्ज्वल, स्पष्ट स्वस्थ ऊर्जा को रोकती है या सामान्य प्रवाह मे रुकावट पैदा करने का कार्य करती है। औरिक ऊर्जा की अशुद्धता का क्षेत्र आभा की सात परतों में किसी पर मौजूद हो सकता है। यह अस्वास्थ्यकर ऊर्जा की अशुद्धता आपके रोगी की भावनात्मक, मानसिक या आध्यात्मिक जीवन में शारीरिक बीमारी या समस्याओं में योगदान दे सकती है।

प्राणिक ऊर्जा स्तर-II में आप अपने रोगी की शरीर की सतह के पास कई स्थानों पर जमा हुई आभा ऊर्जा की अशुद्धताओं को निकालने की क्रिया करेंगे। यह अशुद्धियां शरीर की सतह से अधिकतम एक से डेढ़ फुट के ऊपर आम तौर पर मौजूद होती है। यह आभा ऊर्जा दोष अक्सर आभा की 1, 2, 3 और 4वीं परतों के साथ जुड़े होते हैं, लेकिन इनका किसी भी परत के साथ जुड़ा हुआ, इन क्षेत्रों मे अक्सर देखा/पाया जा सकता है और अक्सर अंधेरे ऊर्जा के सघन बादल के साथ जुड़े होने की तुलना की जाती है। आभा ऊर्जा की अशुद्धता के ऐसे बादलों में अक्सर आभा ऊर्जा की कई परतों पर शामिल होती है- एक परत पर ऊर्जा आसन्न परत पर ऊर्जा से जुड़ी होती हैं जो एक ही क्षेत्र या बादल में मौजूद हैं। इन क्षेत्रों या बादलों में आभा ऊर्जा की अशुद्धियों, निश्चित स्थानों के ऊर्जा क्षेत्र में घर्षण विद्युत के रूप मे फंसी होती हैं, क्योंकि आभा परत भी भौतिक शरीर के कब्जे वाले आंतरिक क्षेत्र के भीतर मौजूद हैं और ऊर्जा अशुद्धियों के साथ ही साथ इन क्षेत्रों में आंशिक रूप से शरीर के भीतर हो सकती है। **क्रमशः**